

त्रैलोक्यविजया

अपराजिता

भाषा टीका

इन्द्राक्षी स्तोत्र
और
धनदा देवी स्तोत्र



SHRI JEE VIDHYA MANDIR MATHURA

हनुमान बाहुक	20/- आरती संग्रह	50/-
नारायण कवच	20/- सुन्दरकाण्ड(7फामे)	50/-
दुर्गा कवच	20/- सुन्दरकाण्ड सचित्र	
मूल रामायण	20/- बृहद मोटा अक्षर	80/-
गौरखनाथ शाबर मंत्र विद्या	20/- गीता गुटका	15/-
गुरुगीता	20/- चतुर्विंश गायत्री	15/-
मनका 108 रामायण	20/- ऋण मोचन मंगल स्तौत्र	20/-
आरती माला	20/- गोपाल सस्त्रनाम मूल	20/-
कालसर्प दोष एवं निवारण	20/- श्री हनुमान पाठ	20/-
पितृदोष कारण एवं निवारण	20/- श्री नवग्रह पूजन विधान	20/-
देवी आरतियाँ ही आरतियाँ	20/- त्रिसूक्तं	20/-
सुन्दरकाण्ड बड़ा 64 पेजी	25/- सुखद दाम्पत्य जीवन	
सुन्दरकाण्ड	के लिए वास्तु विज्ञान	15/-
बड़ा 112 पेजी सम्पुटीय	30/- काली चालीसा	15/-
श्रीसूक्त बड़ा लाल	40/- गायत्री चालीसा	15/-
श्री गोपालसहस्रनाम भाषाटीका	30/- पावर्ती (अन्नपूर्णा) चालीसा	15/-
श्री विष्णुसहस्रनाम भाषाटीका	30/- लक्ष्मी (महालक्ष्मी) चालीसा	15/-
एकादशी महात्म्य	50/- सरस्वती (शारदा) चालीसा	15/-

पं. मनीष शंकर शास्त्री द्वारा संकलित एवं अनुवादित

नित्य पाठ करने योग्य शुद्ध पुस्तकें उपलब्ध हैं

वी.पो.पी. द्वारा मँगवाने का पता

श्रीजी विद्या मन्दिर, एच-1/20, सरस्वति कुण्ड, परिक्रमामार्ग- मथुरा

281003

मो.9219590215 फोन.0565-6450499

त्रैलोक्यविजया

अपराजिता स्तोत्रम्

हिन्दी भाषा टीका सहितम्, इन्द्राक्षी स्तोत्र
और धनदा देवी स्तोत्र

सम्पादक :

पं. मनीषशंकर शास्त्री (श्री विद्या तंत्र रत्न)
श्रीजी पीठ मथुरा

मूल्य : 15 रुपये मात्र

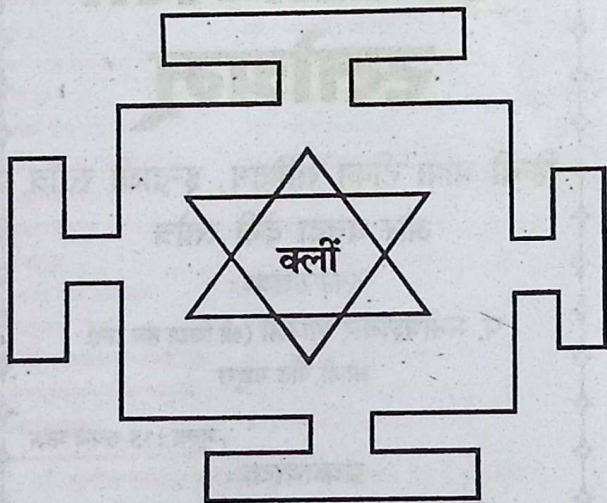
प्रकाशक :

श्रीजी विद्या मन्दिर, मथुरा

फोन न० 6450499

shrijividhyamandir@gmail.com

श्री अपराजितादेवी पूजन यन्त्र



॥ श्री अपराजितादेव्यै नमः ॥

देवी अपराजिता पूजनविधि

सङ्कल्प—साधक दाहिने हाथ में जल-पुष्प-अक्षत-सुपाड़ी लेकर सङ्कल्प करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः इत्यादि मास-पक्षादी उल्लिख्य मम समस्त सदभीष्टसिद्ध्यर्थ श्री भगवत्याः अपराजिता देव्याः यथा लब्धोपचारैः पूजन पूर्वक 'अपराजिता स्तोत्र' पाठम् अहं करिष्ये।

इतना पढ़कर हाथ में लिए हुए सामग्री को किसी पात्र में छोड़ दें। हाथ में रक्त पुष्प लेकर अपराजिता देवी का ध्यान करें।

ध्यान—

ॐ नी	लोत्पलदलश्यामां	भुजङ्गाभरणान्विताम्।
शुद्धस्फटिकसङ्काशां		चन्द्रकोटिनिभाननाम् ॥ १ ॥
शङ्खचक्रधरां	देवीं	वैष्णवीमपराजिताम्।
बालेन्दुशेखरां	देवीं	वरदाभयदायिनीम् ॥ २ ॥

आवाहन—

आगच्छेह महादेवि सर्वाभिष्टप्रदायिनी।
 यावदकर्म-समाप्येत तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥
 श्री अपराजिता देव्यै नमः आवाहनार्थं पुष्पाणि समर्पयामि।

(4)

अपराजिता स्तोत्र

(यह कहकर यन्त्र या मूर्ति के ऊपर फूल चढ़ावें।)

स्नान—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री अपराजितादेव्यै नमः स्नानाङ्गभूतं जलम् समर्पयामि।

(यह कहकर जल चढ़ावें।)

रोली—

गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

गन्धम् समर्पयामि श्री अपराजितादेव्यै नमः। (यह कहकर

रोली चढ़ावें)

फूल—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया हतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पाणि समर्पयामि श्री अपराजितादेव्यै नमः। (इससे फूल

चढ़ावें।)

धूप—

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाद्भ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानीं धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

धूपमाघ्रापयामि श्री अपराजितादेव्यै नमः। (इससे धूप

अपराजिता स्तोत्र

(5)

दिखावें।)

दीप—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि श्रीअपराजितादेव्यै नमः। (इससे दीप दिखावें।)

नैवेद्य—

शर्करा घृतसंयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्।

उपहार-समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

नैवेद्यम् निवेदयामि श्रीअपराजितादेव्यै नमः। (इससे भोग चढ़ावें।)

आरती—

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

प्रार्थना—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

(पुष्प चढ़ावें।) पुनः हाथ में जल लेकर विनियोग आदि करें।

(6)

अपराजिता स्तोत्र

श्री अपराजितादेव्यै नमः

अपराजितास्तोत्रम्

भाषाटीकासहितम्

विनियोगः

ॐ अस्या वैष्णव्याः पराया अजिताया महाविद्यायाः,
 वामदेवबृहस्पतिमार्कण्डेया ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-
 बृहती-छन्दांसि, लक्ष्मी-नृसिंहो देवता ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं
 बीजम्, हुं शक्तिः, सकलकामनासिद्ध्यर्थम् अपराजित-
 विद्यामन्त्रपाठे विनियोगः ।

ध्यान

ॐ नीलोत्पलदलश्यामां भुजङ्गाभरणान्विताम् ।
 शुद्धस्फटिकसङ्काशां चन्द्रकोटिनिभाननाम् ॥ १ ॥

“ॐ अस्या” से प्रारम्भ करके “अपराजिताविद्यामन्त्रपाठे विनियोगः” तक पढ़कर विनियोग का जल भूमि पर छोड़ें । पुनः हाथ में रक्त पुष्प लेकर अपराजिता देवी का ध्यान करें ।

ध्यान

नीलकमल के ऊपर विराजमान काले सर्पों को आभूषण रूप

अपराजिता स्तोत्र

(7)

शङ्खचक्रधरां देवीं वैष्णवीमपराजिताम् ।
 बालेन्दुशेखरां देवीं वरदाभयदायिनीम् ॥ २ ॥
 नमस्कृत्य पपाठैनां मार्कण्डेयो महातपाः ॥ ३ ॥

मार्कण्डेय उवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम् ।
 असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम् ॥ १ ॥
 ॐ नमो नारायणाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,

में धारण करने वाली, शुद्ध स्फटिक के समान आभा वाली तथा करोड़ों चन्द्रमा के समान जिनके मुखमण्डल की कान्ति है। शङ्ख, चक्र धारण करने वाली वैष्णवी अपराजिता देवी, बाल चन्द्र के समान कान्ति वाली तथा अभया रूपी वरदान देनेवाली देवी को नमस्कार कर के महातपस्वी मार्कण्डेय ऋषि ने ऐसा कहा ॥ १-३ ॥

मार्कण्डेय मुनि ने कहा

सभी मुनिजन सुनें कि, सभी प्रकार की कामनाओं एवं अर्थ (द्रव्य) की सिद्धि प्रदान करनेवाली (जो मन्त्र सिद्ध न हो) उसमें भी सिद्धि प्रदान करने वाली वैष्णवी अपराजिता हैं ॥ १ ॥

“ ॐ नमो नारायणाय ” से “ जनार्दन, नमोऽस्तु ते स्वाहा ”

(8)

अपराजिता स्तोत्र

नमोऽस्तु अनन्ताय, सहस्र-शीर्षाय, क्षीरोर्णवशायीने,
 शेषभोगपर्यङ्काय, गरुड-वाहनाय, अमोघाय, अजाय,
 अजिताय, अपराजिताय, पीतवाससे । ॐ वासुदेव,
 सङ्कर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, हयग्रीव, मत्स्य, कूर्म, वराह,
 नृसिंह, अच्युत, वामन, त्रिविक्रम, श्रीधर, राम, राम, राम ।
 वरद, वरद, वरदो भव, नमोऽस्तु ते, नमोऽस्तु ते, नमोऽस्तु
 ते स्वाहा ।

ॐ असुर-दैत्य-दानव-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-
 पिशाच किन्नर-कूष्माण्ड सिद्ध-योगिनी डाकिनी-
 शाकिनी-स्कन्दपुरोगान् ग्रहान्-उपग्रहान् नक्षत्रग्रहांश्चा-
 ज्यान् हन हन, पच पच, मथ मथ, विध्वंसय विध्वंसय,
 विद्रावय विद्रावय, चूर्णय चूर्णय, शङ्खेन चक्रेण वज्रेण
 शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ सहस्रबाहो, सहस्रप्रहरणायुध, जय जय, विजय
 विजय, अजित अमित, अपराजित, अप्रतिहत, सहस्रनेत्र,
 ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, विश्वरूप, बहुरूप, मधुसूदन,

अपराजिता स्तोत्र

(9)

महावराह, महापुरुष, वैकुण्ठ, नारायण, पद्मनाभ, गोविन्द,
 दामोदर, हृषीकेश, केशव, सर्वासुरोत्सदन,
 सर्वभूतवशङ्कर, सर्वदुःस्वप्न-प्रभेदन, सर्वयन्त्र-प्रभञ्जन,
 सर्वनागविमर्दन, सर्वदेवमहेश्वर, सर्वबन्ध-विमोक्षण,
 सर्वाहित-प्रमर्दन, सर्वज्वर-प्रणाशन, सर्वग्रह-निवारण,
 सर्वपाप-प्रशमन, जनार्दन, नमोऽस्तुते स्वाहा ।

विष्णोरियमनुप्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा ।

सर्वसौभाग्यजननी । सर्वभीतिविनाशिनी ॥ २ ॥

सर्वैश्च पठिता सिद्धैर्विष्णोः परमवल्लभा ।

नाऽनया सदृशं किञ्चिद् दुष्टानां नाशनं परम् ॥ ३ ॥

तक मन्त्र का पाठ करें ।

सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली, सभी सौभाग्य की जननी, सभी प्रकार के भय को नष्ट करने वाली इस अपराजिता स्तोत्र को भगवान् विष्णु ने कहा है ॥ २ ॥

जिसके पाठसे विष्णु प्रिया सभी प्रकार के सिद्धियों को प्रदान करती हैं एवं दुष्टों के नाश के लिए इसके समान कोई दूसरा स्तोत्र नहीं है ॥ ३ ॥

(10)

अपराजिता स्तोत्र

विद्या रहस्या कथिता वैष्णव्येषांऽपराजिता ।
 पठनीया प्रशस्ता वा साक्षात् सत्त्वगुणाश्रया ॥४॥
 ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशायन्तये ॥५॥
 अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि ह्यभयामपराजिताम् ।
 या शक्तिर्मामकी वत्स! रजोगुणमयी मता ॥६॥
 सर्वसत्त्वमयी साक्षात् सर्वमन्त्रमयी च या ।
 या स्मृता पूजिता जप्ता न्यस्ता कर्मणि योजिता ॥७॥

इस प्रकार से अपराजिता विद्या के रहस्य को कहा गया है जिसके पाठ करने से सतोगुणी वैष्णवी देवि सद्यः कल्याण करती है ॥४॥

सभी विघ्नों की शान्ति के लिए श्वेत वस्त्र धारण किए हुए चन्द्रमा के समान धवल कान्ति वाले, प्रसन्नचित्त चतुर्भुज भगवान् विष्णु का ध्यान करना चाहिए ॥५॥

हे वत्स! अब मैं रजोगुणमयी अभया अपराजिता देवि के स्तोत्र को कहता हूँ, जो मेरी ही शक्ति हैं ॥६॥

जो सभी मन्त्रमयी (मन्त्रों से युक्त) और सर्वविध

सर्वकामदुघा वत्स! शृणुष्वैतां ब्रवीमि ते॥८॥

य इमामपराजितां परमवैष्णवीमप्रतिहतां पठति सिद्धां
स्मरति सिद्धां महाविद्यां जपति पठति शृणोति स्मरति धारयति
कीर्तयति वा न तस्याऽग्नि-वायु-वज्रोपलाशनि-वर्षभयं,
न समुद्रभयं, न ग्रहभयं, न चौरभयं, न शत्रुभयं, शापभयं वा
भवेत्। क्वचिद्रात्र्य-न्धकारस्त्री-राजकुल-विद्वेषि-
विषगर, गरद, वशीकरण, विद्वेषणोच्चाटन, वधबन्धनभयं
वा न भवेत्।

एतैर्मन्त्रैरुदाहृतैः सिद्धैः संसिद्धपूजितैः। ॐ नमोऽस्तु
ते। अभये, अनघे अजिते अमिते अमृते अपरे अपराजिते
पठति सिद्धे जपति सिद्धे। स्मरति सिद्धे, एकोनाशीतितमे,
एकाकिनि, निश्चेतसि, सुदुमे, सुगन्धे, एकान्नशे, उमे, ध्रुवे,

कल्याणकारी हैं, जिसके स्मरण-पूजन-जप करने से सभी कर्म
सफल होते हैं॥७॥

हे वत्स! सभी कामनाओं की सिद्धि देने वाले स्तोत्र को कहता
हूँ। आप सभी इस स्तोत्र का श्रवण करें॥८॥

(12)

अरुन्धति, गायत्रि, सावित्रि, जातवेदसि, मानस्तोके,
सरस्वति, धरणि धारिणि, सौदामिनि, अदिति, दिति,
विनते, गौरि, गान्धारि, मातङ्गि, कृष्णे, यशोदे, सत्यवादिनि,
ब्रह्मवादिनि, कालि, कपालिनि, करालनेत्रे, भद्रे, निद्रे,
सत्योपयाचनकरि, स्थलगतं, जलगतम्, अन्तरिक्षगतं वामां
रक्ष सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा ।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि ।
म्रियते बालको यस्याः काकबन्ध्या च या भवेत् ॥ ९ ॥
धारयेद् या इमां विद्यामेतैर्दोषैर्न लिप्यते ।
गर्भिणी जीववत्सा स्यात् पुत्रिणी स्यान्न संशयः ॥ १० ॥

“य इमाम्” से “सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा” तक पाठ करें ।

जिस स्त्री का रजोधर्म नष्ट हो जाए अथवा गर्भ-स्त्रावित् हो जाए,
बालक उत्पन्न होकर मर जाए अथवा जिसको एक ही बार लड़का
हुआ हो ॥ ९ ॥

जो स्त्री इस विद्या को धारण करती हैं इन सभी (पूर्वोक्त) दोषों
से रहित होकर गर्भिणी स्त्री जीवित पुत्र को उत्पन्न कर पुत्रिणी
कहलाती है । इसमें संशय नहीं है ॥ १० ॥

भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां लिखित्वा गन्ध-चन्दनैः ।
 एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत् ॥११॥
 रणे राजकुले द्यूते नित्यं तस्य जयो भवेत् ।
 शस्त्रं वारयते ह्येषां समरे काण्डदारुणे ॥१२॥
 गुल्म-शूलाक्षि-रोगाणां क्षिप्रं नाशयति व्यधाम् ।
 शिरोरोग-ज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् ॥१३॥
 इत्येषा कथिता विद्या अभयाख्याऽपराजिता ।
 एतस्याः स्मृतिमात्रेण भयं क्वापि न जायते ॥१४॥

भोजपत्र पर गन्धमिश्रित चन्दन से इस विद्या को लिखकर धारण करने वाली स्त्री दोष रहित होकर सुन्दर पुत्र को उत्पन्न करती है ॥११॥

इसके धारण से युद्ध में, राजदरबार में, जुआ में सर्वदा उसकी विजय होती है। भीषण जंगल में, समुद्र में एवं युद्ध में शस्त्रों का आघात भी प्रभाव नहीं करता ॥१२॥

इसके धारण करने वाले सभी प्राणी के गुल्म-शूल-नेत्र-सिर-पीड़ा एवं ज्वरादि जैसे कष्टकारी रोग निश्चित ही नष्ट हो जाते हैं ॥१३॥

(14)

अपराजिता स्तोत्र

नोपसर्गा न रोगाश्च न योधा नाऽपि तस्कराः ।
 न राजानो न सर्पाश्च न द्वेष्टारो न शत्रवः ॥१५॥
 यक्ष-राक्षस-वेताला न शाकिन्यो न च ग्रहाः ।
 अग्नेर्भयं न वाताच्च न समुद्रात्र वै विषात् ॥१६॥
 कर्मणं वा शत्रुकृतं वशीकरणमेव च ।
 उच्चाटनं स्तम्भनं च विद्वेषणमथापि वा ॥१७॥
 न किञ्चित् प्रभवेत्तत्र यत्रैषा वर्ततेऽभया ।
 पठेद् वा यदि वा चित्रे पुस्तके वा मुखेऽथवा ॥१८॥

यह कही हुई विद्या अभयता को प्रदान करने वाली अपराजिता
 विद्या है। इसके स्मरण मात्र से सर्वाविध भय का नाश होता है (या
 सी भी प्रकार का भय नहीं सताता) ॥१४॥

इसके धारण करने से-संकट, रोग, योद्धा और तस्कर
 (डाकू), राजा, सर्प, दुष्ट, शत्रु, यक्ष-राक्षस-वेताल, शाकिनी,
 ग्रह, अग्नि, तूफान, समुद्र या विष का भय नहीं रहता है ॥१५-१६॥

शत्रुओं के द्वारा किया गया, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन,
 विद्वेषण अथवा अभिचार कर्म (जादू-टोना) का प्रभाव थोड़ा भी
 नहीं रहता है। जहाँ पर भगवती की चित्र पुस्तक, मुख में स्तोत्र पाठ

हृदि वा द्वारदेशे वा वर्तते ह्यभयः पुमान्।
 हृदये विन्यसेदेतां ध्यायेद् देवीं चतुर्भुजाम्॥१९॥
 रक्तमाल्याम्बरधरां पद्मरागसमप्रभाम्।
 पाशा-ऽङ्कुशा-ऽभयवरैरङ्कृत-सुविग्रहाम्॥२०॥
 साधकेभ्यः प्रयच्छन्ती मन्त्रवर्णामृतान्यपि।
 नाऽतः परतरं किञ्चिद् वशीकरणमुत्तमम्॥२१॥
 रक्षणं पावनं चाऽपि नाऽत्र कार्या विचारणा।

एवं हृदय में भगवती का ध्यान रहता है उसे देश और परदेश में भी भय की प्राप्ति नहीं होती है। साधक अपने हृदय में चार भुजाओं से युक्त देवी का इस प्रकार से ध्यान करें ॥१७-१९॥

गले में रक्त पुष्प की माला धारण किए हुए, पद्मरागमणि के समान छटा वाली, हाथों में पाश-अङ्कुश अभय एवं वर मुद्रा को धारण करने वाली सुन्दर स्वरूपा भगवती अपने भक्तों को मन्त्र द्वारा अमृतमयी फल को प्रदान करने वाली हैं। वशीकरण के लिए इससे उत्तम उपाय कोई दूसरा नहीं है ॥२०-२१॥

इससे साधक की रक्षा भी होती है। इसमें संशय नहीं करना चाहिए। प्रातःकाल में कुमारी कन्या का पूजन करके भोजन एवं

(16)

अपराजिता स्तोत्र

प्रातः कुमारिकाः पूज्याः खाद्यैराभरणैरपि ॥ २२ ॥

तदिदं वाचनीयं स्यात् तत्प्रीत्या प्रीयते तु माम् ।

ॐ अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि विद्यामपि महाबलाम् ॥ २३ ॥

सर्वदुष्टप्रशमनीं सर्वशत्रुक्षयङ्करीम् ।

दारिद्र्य-दुःखशमनीं दौर्भाग्यं व्याधिनाशिनीम् ॥ २४ ॥

भूत-प्रेत-पिशाचानां यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाम् ।

डाकिनी-शाकिनी-स्कन्द-

कूष्माण्डानां च नाशिनीम् ॥ २५ ॥

महारौद्रीं महाशक्तिं सद्यः प्रत्ययकारिणीम् ।

आभूषण से प्रसन्न करें ॥ २२ ॥

हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि आप हम पर प्रसन्न हो जाएं । अब मैं सभी दुष्टों का शमन करने वाली, सभी शत्रुओं का विनाश करने वाली, दारिद्र्य, दुःख-दुर्भाग्य-व्याधि (रोग जनित पीड़ा), भूत-प्रेत-पिशाच, यक्ष-राक्षस-गन्धर्व, डाकिनी-शाकिनी, स्कन्द, कूष्माण्ड आदि का विनाश करने वाली महारौद्री, महाशक्ति एवं वरन्त निर्विघ्न होकर कार्य करने वाली

गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वस्वं पार्वतीपतेः ॥२६॥
 तामहं ते प्रवक्ष्यामि सावधानमनाः शृणु।
 एकाहिकं द्व्यहिकं चातुर्थिकार्द्धमासिकम् ॥२७॥
 द्वैमासिकं त्रैमासिकं तथा चातुर्मासिकम्।
 पञ्चमासिकं षण्मासिकं वातिक-पैत्तिकज्वरम् ॥२८॥
 श्लैष्मिकं सान्निपातिकं तथैव सततं ज्वरम्।
 मौहूर्तिकं पैत्तिकं शीतज्वरं विषमज्वरम् ॥२९॥
 द्व्यहिकं त्र्यहिकं चैव ज्वरमेकाहिकं तथा।

महाबलशाली विद्या को कहता हूँ। यह भगवान् शंकर का सर्वस्व है एवं इसको यत्न पूर्वक गोपनीय रखना चाहिए ॥२३-२६॥

ऐसी विद्या को आप सभी से कहता हूँ, इसे सावधान मन से सुनिए। जिसके प्रभाव से एक दिन, दो दिन, चार दिन, आधा महीना, एक महीना, दो महीना, तीन महीना, चार, महीना, पाँच महीना तथा छः महीना पुराना वात-पित्त-ज्वर-कफ-भीषण ज्वर, शीत ज्वर, विषम ज्वर, निरन्तर रहने वाले सभी प्रकार के ज्वर भी भगवती अपराजिता के नित्य स्मरण से निश्चित ही एक मुहूर्त में नष्ट हो जाते हैं ॥३०॥

(18)

अपराजिता स्तोत्र

क्षिप्रं नाशयते नित्यं स्मरणादपराजिता ॥३०॥

मन्त्रः

ॐ ह्रीं हन हन, कालिशरशर, गौरि धम धम, विद्ये आले
ताले माले गन्धे बन्धे पच पच विद्ये नाशय नाशय पापं हर हर
संहारय वा दुःस्वप्न विनाशिनि कमलस्थिते विनायकमातः
रजनि सन्ध्ये, दुन्दुभिनादे, मानसवेगे, शङ्खिनि, चक्रिणि,
गदिनि, वज्रिणि शूलिनि अपमृत्युविनाशिनि विश्वेश्वरि,
द्रविडि द्राविडि द्रविणि द्राविणि केशवदयिते,
पशुपतिसहिते दुन्दुभिदमनि दुर्मददमनि शबरि किराति,
मातङ्गि ॐ द्रं द्रं जं जं क्रं क्रं तुरु तुरु ॐ द्रं कुरु कुरु ।

ये मां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् सर्वान् दम दम, मर्दय
मर्दय, तापय, तापय, गोपय गोपय, पातय पातय, शोषय,
शोषय, उत्सादय उत्सादय, ब्रह्माणि वैष्णवि माहेश्वरि कौमारि

मन्त्रः

“ ॐ ह्रीं हन हनु ” से “ इन्द्रो पेन्द्र भगिनि ” तक का जप करें ।

जय, विजय, शान्ति, तुष्टि-पुष्टि को बढ़ाने वाली, काम पर

वाराहिनारसिंहि ऐन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि वैन्यायिकि औपेन्द्रि
 आग्नेयि चण्डि नैर्ऋति वायव्ये सौम्ये ऐशानि ऊर्ध्वमधोरक्ष
 प्रचण्डविद्ये इन्द्रोपेन्द्रभगिनि ।

ॐ नमो देवि जये विजये शान्ति

स्वस्तितुष्टिपुष्टिविवर्धिनि ।

कामाङ्कुशे कामदुधे सर्वकामप्रदे ॥३१॥

सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा । आकर्षणि
 आवेशनि । ज्वालामालिनिरमणिरामणि, धरणि धारिणि,
 तपनि तापिनि, मदनि मादिनि, शोषणि सम्मोहिनि
 नीलपताके महानीले महागौरि महाश्रिये । महाचान्द्रि महासौरि
 महामायूरि आदित्यरश्मि जाह्नवि । यमघण्टे किणि किणि
 चिन्तामणि । सुगन्धे सुरभे सुराऽसुरोत्पन्ने सर्वकामदुधे,

अङ्कुश रखने वाली, सभी कामनाओं को पूरा करने वाली देवी
 अपराजिता को नमस्कार है ॥३१॥

पुनः “सर्वभूतेषु” से “ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा” तक मन्त्र
 पढ़ें ।

यद्यथामनीषितं कार्यं तन्मम सिद्ध्यतु स्वाहा ।

ॐ स्वः स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । ॐ भुवः स्वाहा । ॐ
स्वः स्वाहा । ॐ महः स्वाहा । ॐ जनः स्वाहा । ॐ तपः
स्वाहा । ॐ सत्यं स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ।

यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहेत्योम् ।
अमोघैषा महाविद्या वैष्णवी चाऽपराजिता ॥३२॥
स्वयं विष्णुं प्रणीता च सिद्धेयं पाठतः सदा ।
एषा महाबला नाम कथिता तेऽपराजिता ॥३३॥
नाऽनया सदृशी रक्षा त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
तमोगुणीमयी साक्षाद्रौद्री शक्तिरियं मता ॥३४॥

हे वैष्णवी अपराजिता ! जो पाप जहाँ से आया है वहीं चला जाए
अर्थात् नष्ट हो जाए । एवं यह महाविद्या अचूक है ॥३२॥

स्वयं विष्णु ने इसकी रचना की है । पाठकों को हमेशा सिद्धि
प्रदान करने वाली महाबल से युक्त इस देवी का नाम अपराजिता
(कहीं पराजित न होने वाली) कहा गया है ॥३३॥

यह शक्ति तमोगुण से युक्त रुद्राणी है । तीनों लोकों में इसके
समान रक्षा करने वाली कोई अन्य नहीं है ॥३४॥

कृतान्तोऽपि यतो भीतः पादमूले व्यवस्थितः ।
 मूलाधारे न्यसेदेतां रात्रावेनां च संस्मरेत् ॥ ३५ ॥
 नील-जीमूत-सङ्काशां तडित्-कपिल-केशिकाम् ।
 उद्यदादित्यसङ्काशां नेत्रत्रय-विराजिताम् ॥ ३६ ॥
 शक्तिं त्रिशूलशङ्खं च पानपात्रं च बिभ्रतीम् ।
 व्याघ्रचर्मपरीधानां किङ्किणीजालमण्डिताम् ॥ ३७ ॥
 धावन्तीं गगनस्याऽन्तः पादुकाहितपादकाम् ।
 दंष्ट्राकरालवदनां व्याल-कुण्डल-भूषिताम् ॥ ३८ ॥

मृत्यु (यमराज) के भय से भयभीत प्राणी-भगवती के चरण कमलों को अपने मूलाधार में ध्यान करते हुए रात्री में स्मरण करें ॥ ३५ ॥

नीले बादल की तरह, बिजली जैसी भूरे रंग के केश-पाश से युक्त, उगते हुए सूर्य के समान कान्ति वाली तीन नेत्रों से युक्त, उगते हुए सूर्य के समान कान्ति वाली तीन नेत्रों से युक्त हाथों में शक्ति, त्रिशूल, शङ्ख एवं पान पात्र को धारण किए हुए, बाघम्बर को वस्त्र बनाकर धारण किए हुए, पैरों में घूँघरू-युक्त पायल को धारण किए हुए आकाश में दौड़-दौड़कर अपने चरणों से दुष्टों का नाश कर रही

व्यात्तवक्त्रां ललज्जिह्वां भृकुटी-कुटीलालकाम् ।
 स्वभक्तद्वेषिणां रक्तं पिबन्तीं पानपात्रतः ॥३९॥
 सप्तधातून् शोषयन्तीं क्रूर दृष्ट्या विलोकनात्
 त्रिशूलेन च तज्जिह्वां कीलयन्तीं मुहुर्मुहुः ॥४०॥
 पाशेन बद्ध्वा तं साध्यमानयन्तीं तदन्तिके ।
 अर्द्धरात्रस्य समये देवीं ध्यायेन्महाबलाम् ॥४१॥

है, बड़े-बड़े दाँत एवं भयङ्कर मुखवाली, कानों में साँप को कुण्डल
 के समान धारण करने वाली जिनका मुख खुला हुआ है, भौंहें तनी
 हुई हैं, तथा घुँघराले बाल से युक्त अपने भक्त के बैरी के रुधिर
 (रक्त) को पान-पात्र से पी रही है जिसके कारण उनकी जिह्वा
 रक्तवर्ण (लाल) की हो गई है ॥३६-३९॥

अपने बैरी को क्रूर दृष्टि से देखकर उसके सातों धातुओं
 (अस्थि, रक्त, मज्जा, त्वचा, वसा, शुक्र, स्नायु) को सुखा दे रही
 है। उसकी जिह्वा को अपने त्रिशूल से बार-बार कीलित कर रही
 है। ॥४०॥

उसको अपने पाश से बाँधकर अन्तिम अवस्था को प्राप्त करा
 देती है। ऐसी महाबलशाली देवी को अर्द्धरात्री के समय में ध्यान

यस्य यस्य वदन्नाम जपेन्मन्त्रं निशान्तके।
तस्य तस्य तथाऽवस्थां कुरुते साऽपि योगिनी ॥४२॥

ॐ बले महाबले असिद्धसाधनी स्वाहेत्योम् अमोघां
पठितसिद्धां श्रीवैष्णवीम्।

श्रीमदपराजितविद्यां ध्यायेत्

फलश्रुतिः

दुःस्वप्ने च दुररिष्टे दुर्निमित्ते तथैव च।
व्यवहारे भवेत् सिद्धिः पठेद् विघ्नोपशान्तये ॥४३॥

करना चाहिए ॥४१॥

देवी के मन्त्र का जप जैसे-जैसे निशा के अन्त में किया जाए
वैसी-वैसी स्वरूप को भगवती योगिनी रूप में धारण करती
हैं ॥४२॥

“ॐ बले” से “वैष्णवीम्” का पाठ करें।

श्रीमत् अपराजितविद्या का ध्यान करना चाहिए।

फलश्रुति

दुःस्वप्न में, अरिष्ट में, कठिन परिस्थितियों में, व्यवहार में,
विघ्नों को शान्त करने के लिए इसके पाठ से सिद्धि होती
है ॥४३॥

(24)

अपराजिता स्तोत्र

क्षमा प्रार्थना

यदत्र पाठे जगदम्बिके! मया, विसर्ग-विन्दुक्षर-हीनमीरितम्।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रयान्तु मे,

सङ्कल्पसिद्धिस्तु सदैव जायताम् ॥४४॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशासि महेश्वरि!
यादृशासि महादेवि! तादृशायायै नमो नमः ॥४५॥

इति सम्पूर्णम्।

क्षमा प्रार्थना

हे जगदम्बिके! मेरे द्वारा किया गया जो पाठ है, उसमें विसर्ग,
बिन्दु, अक्षर यदि छूट गया हो तो आपकी कृपा से वह पूर्ण हो जाए
और मेरे सङ्कल्प की सिद्धि हो ॥४४॥

हे महेश्वरि! आपके तत्त्व (स्वरूपादि) को मैं नहीं जानता हूँ
कि आप किस प्रकार की हैं, आप जिस प्रकार की भी हैं, उसी
स्वरूप में आपको नमस्कार है ॥४५॥

अपराजितास्तोत्र की हिन्दी टीका समाप्त।

टीकाकार -

पं. मनीष शंकर शास्त्री (श्री विद्या तंत्र रत्न)

श्रीजी पीठ, मथुरा

इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीनर्मदादेव्यै नमः ॥

ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिः ॥
 अनुष्टुप् छन्दः ॥ इन्द्राक्षी देवता ॥ महालक्ष्मी बीजम् ॥
 भुवनेश्वरी शक्तिः ॥ भवानीति कीलकम् ॥ मम
 सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ अथ न्यासः ॥

इन्द्राक्षी अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः ॥
 माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः ॥ अम्बुजाक्षी अनामिकाभ्यां
 नमः ॥ कात्यायनी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ कौमारी
 करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥ इन्द्राक्षी हृदयाय
 नमः ॥ महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा ॥ माहेश्वरी शिखायै वषट् ॥
 अम्बुजाक्षी कवचाय हुम् ॥ कात्यायनी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
 कौमारी अस्त्राय फट् ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे
 स्वाहा ॥ ॐ हूं शिखाय वषट् ॥ ॐ ह्रैं कवचा हुम् ॥ ॐ ह्रौं

नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥

॥अथ दिग्बन्धः॥

प्राच्यै दिशे नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥

आग्नेय्यै दिशे नमः ॥ अग्नये नमः ॥

याम्यायै दिशे नमः ॥ यमाय नमः ॥

नैऋत्यै दिशे नमः ॥ नैऋत्याय नमः ॥

प्रतीच्यै दिशे नमः ॥ वरुणाय नमः ॥

वायव्यै दिशे नमः ॥ वायवे नमः ॥

उदीच्यै दिशे नमः ॥ कुबेराय नमः ॥

ईशान्यै दिशे नमः ॥ ईश्वराय नमः ॥

उर्ध्वायै दिशे नमः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥

अधरायै दिशे नमः ॥ अनन्ताय नमः ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बन्धनम् ॥

अथ ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजादेवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम् ॥
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेनवरप्रदाम् ॥१॥
इन्द्राक्षीं सहस्रयुवतीनानालङ्कारभूषिताम् ॥

प्रसन्नवदनांभोजामप्सरोगणसेविताम्

॥२॥

॥अथ मन्त्रः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा ॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥

॥इन्द्र उवाच॥

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहता ॥
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥१॥
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा ॥
सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥२॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला ॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥३॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विकटाङ्गी जलोदरी ॥
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥४॥
अद्रिजा भद्रजा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया ॥
शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ॥५॥
इन्द्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिपरायणा ॥
सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरा भुवनेश्वरी ॥६॥

एकाक्षरी परब्रह्म स्थूलसूक्ष्मप्रवर्द्धिनी ॥
 वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥७॥
 श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मैधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥
 अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोका पराजिता ॥८॥
 भवानी पार्वती दुर्गा हैमंत्यंबिका शिवा ॥
 शिवा भवानी रूद्राणी शङ्करार्द्धशरीरिणी ॥९॥
 एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ॥
 आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानवित्तं यशोबलम् ॥१०॥
 शतमावर्त्तयेद्यस्तुमुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
 आवर्त्तन सहस्रन्तुलभते वाञ्छितं फलम् ॥
 राजानं च समाप्नोति इन्द्राक्षीं नात्र संशयः ॥
 नाभिमात्रे जले स्थित्वा सहस्रपरिसंख्यया ॥१२॥
 जपेत्स्तोत्रमिदं मन्त्रं वाचासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥
 सायंप्रातः पठेन्नित्यं षण्मासैः सिद्धिरुच्यते ॥१३॥
 संवत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये ॥
 अनेन विधिना भक्ता मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥१४॥
 सन्तुष्टा च भवेद्देवी प्रत्यक्षं संप्रजायते ॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यामिदं स्तोत्रं पठेन्नरः ॥१५॥
 धावतस्तस्य नश्यन्ति विघ्नसंख्या न संशयः ॥
 कारागृहे यदा बद्धो मध्यरात्रे तदा जपेत् ॥१६॥
 दिवसत्रयमात्रेण मुच्यते नात्र संशयः ॥
 सकामो जपते स्तोत्रं मन्त्रपूजा विचारतः ॥१७॥
 पंचाधिकैर्दशादित्यैरियं सिद्धिस्तु जायते ॥
 रक्तपुष्पै रक्तवस्त्रै रक्तचन्दनचर्चितैः ॥१८॥
 धूपदीपैश्च नैवेद्यैः प्रसन्ना भगवती भवेत् ॥
 एवं संपूज्य इन्द्राक्षीमिन्द्रेणपरमात्मना ॥१९॥
 वरं लब्धं दितेः पुत्रा भगवत्याः प्रसादतः ॥२०॥

॥हरिः ॐ तत्सतः॥

॥इति श्रीमदिन्द्रोक्तमिन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥शुभमस्तु॥

सर्व अभीष्ट फलप्रद—

धनदा देवी स्तोत्र

शिव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि धनदां सर्वसिद्धिदाम्।

यामाराध्य महादेवि कुवेरो धननायकः ॥ 1 ॥

दान्तं विन्दुसमारूढं महामायां हरिप्रियाम्।

रतिप्रिये ततः पश्चाद् वह्निजायां ततः प्रिय ॥ 2 ॥

नवाक्षरो महामन्त्रो द्रुतं सिद्धिप्रदायकः।

कुवेरोऽस्य ऋषिः प्रोक्तं पङ्क्तिश्छन्द उदहतम् ॥ 3 ॥

देवता धनदा देवी सर्वसिद्धि प्रदायिनीं।

धर्मार्थकाममोक्षाख्यश्चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ 4 ॥

षड्दीर्घमायया चैव षडंगन्यासमाचरेत्।

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि येन सिद्धी भवेन्नरः ॥ 5 ॥

ओं देवीं कांचनकांतिकायविमलां।

रक्तां शुकाच्छादितां हेमाम्भोजयुगाभयाङ्
 कुशकरीं रत्नोल्लसत्कुण्डलाम् ॥6॥
 सर्वाभीष्टफलप्रदां त्रिनयनां नागेन्द्रहारोज्ज्वलां
 वन्दे सर्वभयापहं त्रिजगतां पापापहारीं पराम् ॥7॥
 स्वकीयात्मस्वरूपां तां भावयेच्चित्स्वरूपिणीम् ।
 एवं ध्यात्वा महेशानि मानसः पूजनं चरेत् ॥8॥
 अर्घ्यपात्रं स्थापयित्वा धेनुयोनिं प्रदर्शयेत् ।
 पीठपूजां ततः कृत्वा ततः पीठन्तु संजपेत् ॥9॥
 आधारशक्तिमारभ्य यजेत्पद्मासनं प्रिये ।
 प्रणवादिनमोऽन्तेन पूजयेत्साधकाग्रणीः ॥10॥
 पुनर्ध्यात्वा महेशानि मूलेनावहनं चरेत् ।
 षडङ्गेन च सम्पूज्य जीवन्यासं समाचरेत् ॥11॥
 देवायै च ततः पश्चाद्योगात्मकमनुस्मरेत् ।
 नवयोन्यात्मकं चक्रं विलिखेत् कर्णकोपरि ॥12॥
 द्विदलं पद्ममालिख्य चतुरस्रं ततो बहिः ।

कोणेषु वज्रं संलिख्य मध्ये बीजं समुल्लिखेत् ॥ 13 ॥
 इदं यन्त्रं महेशानि साक्षाद् देवीस्वरूपकम् ।
 लक्ष्मीं पद्मां पद्मालयां श्रियं चैव हरिप्रियाम् ॥ 14 ॥
 शंखां तु कमलां चैव अब्जां च चंचलां तथा ।
 लोलां च प्रणवाद्येता नमोऽन्तेन प्रपूजयेत् ॥ 15 ॥
 पुनर्मध्ये ततो देवीं देव्या हस्ते समर्पयेत् ।
 प्राणायामं ततः कृत्वा प्रणामाष्टांगमाचरेत् ॥ 16 ॥
 अथोत्थाय महेशानि विशेषार्घ्यं निवेदयेत् ।
 आत्मसमर्पणं कृत्वा विहरेच्च निजेच्छया ॥ 17 ॥

क्या पूरी मेहनत के बाद भी आपको अपनी मेहनत का पूरा फल नहीं मिलता? क्या भरपूर आमदनी होने पर भी बचत नहीं होती? क्या पिता पुत्र में वैचारिक मतभेद व तनाव रहता है? क्या मांगलिक कार्यों में अड़चनें आ रही हैं? तो संभव है कि आप पितृदोष से पीड़ित हो कैसे बनता है वह पितृदोष? कैसे सामान्य जीवन को असमानरूप बना देता है यह दोष? क्या इस दोष का कोई उपाय है? आदि! इस दोष के उपर सम्पूर्ण प्रकाश डालने वाली पुस्तक पितृदोष कारण एवं निवारण को अवश्य पढ़ें। इस पुस्तक को बृज क्षेत्र मथुरा की प्राचीन तांत्रिक पीठ श्रीजी पीठ के वर्तमान पीठचार्य श्री मनीषशंकर शास्त्री जो की आगम तंत्र एवं श्री विद्या से आचार्य हैं ने गहन शोध के बाद लिखकर उषा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा से प्रकाशित करवाया। नोट-आज ही अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से इस पुस्तक के लिए सम्पर्क करें। न मिलने पर सम्पर्क करें-09219590215

विशाल भृगु संहिता पद्धति

वैदिक ग्रंथों में बहुचर्चित प्राचीन ऋषि भृगु महाराज के असीम ज्ञान एवं पांडित्य से ओत-प्रोत अमर ग्रंथ है भृगु संहिता। हजारों वर्ष पूर्व रचा गया फलित ज्योतिष का यह अभूतपूर्व ग्रंथ आज भी अपनी महती प्रासंगिकता बनाए हुए है तथा आने वाले समय में भी इसकी आभा से मानव मात्र को लाभ मिलता रहेगा। इस ग्रंथ में ज्योतिष के केवल फलित अंग को प्रस्तुत किया गया है। इसकी सहायता से संसार के किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली में स्थित विभिन्न ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है। ग्रहों का प्रभाव मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता रहता है। फलित ज्योतिष का सबसे बड़ा लाभ यही है कि जन्मकुण्डली द्वारा जीवन में घटने वाली तमाम तरह की घटनाओं का पता चल जाता है। यही मानव कल्याण के लिए उपयोगी है। शुभ फलों से उत्साह-वर्धन होता है और जीवन सही रास्ते पर गतीशील रहता है। अशुभ फलों का विचार सतर्क करता है, ताकि विपत्तियों, बाधाओं एवं आने वाली कठिनाइयों से बचा जा सके, जीवन पर छाए दुःखों के काले बादलों को हटा कर सफलता, उन्नति तथा आनन्द के प्रकाश से भर सकें। इस पुस्तक में प्रारंभिक तथा आवश्यक जानकारीयां दी गई हैं। लग्नों की कुण्डलियों का फलादेश है, ग्रहों की युति, उच्च-नीच, मूल त्रिकोण, मित्र तथा शत्रुराशिस्थ ग्रहों की महादशा से संबंधित फलादेश जैसे विषय दिये गये हैं इस प्रकार यह ग्रंथ आम पाठक के लिए अत्यधिक उपयोगी है। निश्चित ही ज्योतिष विद्या से बिल्कुल अनजान लोग भी इससे पर्याप्त लाभ उठा सकेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

वी.पी द्वारा मगवाने का पता-

मूल्य 350/- वी.पी. खर्च अलग

श्रीजी विद्या मन्दिर

एच-1/20, गोविन्द नगर, सरस्वति कुण्ड, परिक्रमा मार्ग, मथुरा (उ.प्र.) 281004 -

फोन (0565)-6450499

www.shrijeevidhyamandir.com

shrijeevidhyamandir@gmail.com



A COMPLETE ONLINE RELIGIOUS PRODUCT STORE

BOOKS | KANTHI-MALA

RELIGIOUS ITEMS | FRAGRANCES

www.shrijeevidhyamandir.com

H-1/20, Govind Nagar, Sarswati Kund, Prikrma Marg- MATHURA (281004)

Call : 0565-6450499, +91-9219590215, +91-9719898161 Email : shrijeevidhyamandir.com



श्री श्रीजी चरणानुरागी आचार्य मनीषशंकर शास्त्री चतुर्वेदः

Mob : +91-9412226481, +91-94100038887

मध्यव्याकरण, ज्योतिष, फलित, आगमतंत्र एवं श्री मद्भागवत व देवी भागवत प्रवक्ता।

